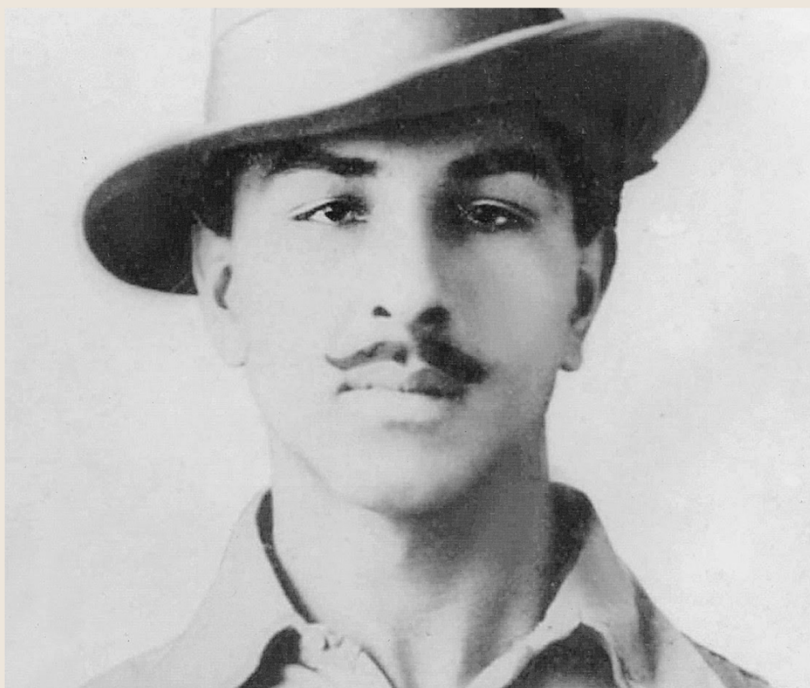
हम नास्तिक काहे बानीं

भगत सिंह



भोजपुरी अनुवाद : शुभनीत कौशिक

'मैं नास्तिक क्यों हूँ' का भोजपुरी अनुवाद

हम नास्तिक काहे बानीं?

भगत सिंह

भोजपुरी अनुवाद : शुभनीत कौशिक

प्रकाशन वर्ष : 2023

अनुक्रम

भूमिका

हिंदुस्तान क आज़ादी क लड़ाई में कुरबानी देवे वाला क्रांतिकारियन में भगत सिंह के नाम अमर बा। आपन बलिदान से भगत सिंह खाली हिंदुस्तान के लाखन लोगन के दिलो-दिमाग में जगह ना बनवलें बलुक उहाँ के जनता के भीतर क्रांति के अलख जगावे क काम कइनीं। तेइस बरिस के कमे उमिर में हिंदुस्तान क तमाम समस्या पे भगत सिंह आपन जवन बिचार रखलन, समाधान दिहलें, उ आजुओ प्रासंगिक बा। समस्या चाहे जातिबाद आ छुआछूत के होखे, भा साम्प्रदायिक दंगा आ उन्माद के आ चाहे दिमाग़ी गुलामी के - ई सगरी समस्या पे भगत सिंह एगो मौलिक बिचारक लेखा सोचलन आ आपन बिचार दिहलन। एही कुल्ही मुद्दा से जुड़ल उहाँ के बिचार ओ घरी के पंजाबी, उर्दू, हिंदी आ अंगरेज़ी के पत्र-पत्रिका में छपल रहलें स। किरती, अभ्युदय, भविष्य, प्रताप, ट्रिब्यून आ मॉडर्न रिव्यू लेखा तमाम पत्र-पत्रिका में भगत सिंह के लिखल लेख छपल बाड़ें स, जेवन आजो हमनीं के राह देखावे के काम कर रहल बा।

भगत सिंह आ उहाँ के बिचार-यात्रा प चरचा करला से पहिले ई जरुरी बा कि हमनी के तनी हिंदुस्तान में क्रांतिकारी आंदोलन के सुरुआत के जान-समझ लिहीं जा। ओनइसवीं सदी हिंदुस्तान के इतिहास में बड़ा उलटफेर के ज़माना रहे। ओही घरी ईस्ट इंडिया कम्पनी के खेलाफ सन सत्तावन क क्रांति भईल, जेमें मंगल पांडे, कुँवर सिंह, तात्या टोपे, रानी लक्ष्मीबाई लेखा लोग क्रांति के नेतृत्व

कइलें। सत्तावनी क्रांति कामयाब ना होखल, बनूक क बल पे बिद्रोह के दबा दिहल गइल बाकिर ओ बिद्रोहियन के कुरबानी हिंदुस्तानी जनता के दिल में हरमेसा ख़ातिर समा गइल।

आगा चलके ओनइसवीं सदी में फेरु क्रांतिकारी आंदोलन ज़ोर पकड़लस। महाराष्ट्र में बासुदेव बलवंत फड़के आ चापेकर भाईयन लेखा क्रांतिकारी भइल रहलें। ई बलिदानी क्रांतिकारी लोग आपन कुरबानी से हिंदुस्तान में क्रांति के मसाल जरइलें। बीसवीं सदी क पहिला दहाई में बंगाल, पंजाब आ महाराष्ट्र में क्रांतिकारी आंदोलन आपन उभार पे रहे। महाराष्ट्र में लोकमान्य तिलक, बंगाल में बिपिन चंदर पाल आ पंजाब में लाला लाजपत राय आपन राष्ट्रबादी बिचार से जहवाँ एक ओरी देसभक्ति के जोत जलावत रहें, ओहिजे उ लोग क्रांतिकारी आंदोलनो के खुलके आपन समर्थन देत रहीं जा।

एही घरी हिंदुस्तान के बड़का लाट कर्जन 1905 में बंगाल के बँटवारा करे के फ़ैसला लिहलें। कर्जन के एह फ़ैसला से बंगाल के जनता आ नेता लोग इचिको खुस ना रहे आ उ लोग बंगाल के बँटवारा क बिरोध करे सुरु क दिहलें। एकरे बिरोध में बंगाल में स्वदेसी आंदोलन सुरु भईल आ अनुशीलन समिति लेखा क्रांतिकारी संगठन बनलन स। अनुशीलन समिति से सतीश चंदर बसु, पुलिन बिहारी दास, बारिंद्र घोस लेखा लोग जुड़ल रहे।

ओही घरी सन 1907 में भगत सिंह के जनम पंजाब के एगो आर्यसमाजी परिवार में भइल रहे। भगत सिंह के बाबूजी सरदार किसन सिंह पंजाब के नामी देसभक्त रहलें आ भगत सिंह के चाचा

सरदार अजीत सिंह खुदे क्रांतिकारी रहलें, इहे ना उहाँ के देसनिकाला के सजो मिलल रहे। भगत सिंह के जनम के छह साल बाद अमरीका में लाला हरदयाल आ सोहनसिंह भकना सरिखा क्रांतिकारी लोग 'ग़दर पार्टी' के थापना कइलें आ एगो अख़बारो निकललें जेकर नामे रहे 'ग़दर'। ग़दर पार्टी से जुड़ल नेता आ कार्जकर्ता लोग क बहादुरी से भगत सिंह बहुते प्रभावित रहलीं। ग़दर पार्टी के एगो अइसने नवजवान नेता करतार सिंह सराभा के बलिदान आ कुरबानी भगत सिंह के जिनगी पे अमिट छाप छोड़ले रहे आ भगत सिंह उहाँ के आपन आदर्श मानत रहलीं। करतार सिंह सराभा ख़ातिर भगत सिंह क दिल में केतना इज्जत रहे, एकर अंदाज़ा एही से लगावल जा सकेला कि भगत सिंह हरमेसा करतार सिंह सराभा के एगो तस्वीर आपन संगे रखें। भगत सिंह कहें कि 'करतार सिंह सराभा ओनकर गुरु, संगी आ भाई बाड़न'।

भगत सिंह जब बारह साल के रहलीं तबे पंजाब में एगो अइसन दिल दहलावे घटना घटल जे पूरा हिंदुस्तान के झकझोर दिहलस। उ घटना रहे जलियाँवाला बाग हत्याकांड। 13 अप्रैल 1919 के अमृतसर के जलियाँवाला बाग में बैसाखी के दिने हज़ारन क तादाद में लोग पंजाब क मसहूर नेता सत्यपाल आ सैफ़ुद्दीन किचलू क गिरफ़्तारी क बिरोध करे ख़ातिर जलियाँवाला बाग में जमा भइल रहलें। ओ निहत्था लोगन पे निरदयी जनरल डायर आपन सैनिकन से गोली चलवइलस। एही गोलीबारी में सैकड़न लोग शहीद होखले आ हज़ारन लोग घाही भइलें। भगत सिंह क मन पे ओ घटना के बड़ा गहिरा असर पड़ल रहे। आगा चलिके भगत सिंह लाहौर के नैसनल कॉलेज में दाख़िला

लिहलें। आ जयचंद विद्यालंकार लेखा गुरु उहाँ के मिललें, जे उहाँ के परिचय समाजबाद से करइलें। अचरज के बात नइखे कि रवें-रवें भगत सिंह के झुकाव क्रांतिकारी बिचारन के ओर भइल आ उहाँ के क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़ गइलें।

ओ घरी उत्तर भारत में जेवन क्रांतिकारी संगठन सक्रिय रहे, ओकर नाम रहे हिंदुस्तान प्रजातंत्रिक संघ (हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन)। एहि संगठन क थापना महान क्रांतिकारी सचिन्दर नाथ सान्याल कइले रहलीं। आ एह क्रांतिकारी संगठन में राम प्रसाद बिस्मिल, अशफ़ाक़ उल्ला ख़ाँ, राजेंदर लाहिड़ी, रोशन सिंह, चंदरशेखर आज़ाद लेखा लोग शामिल रहे। इहे क्रांतिकारी लोग सन 1925 में काकोरी में रेलगाड़ी में ले जाइल जात सरकारी ख़ज़ाना लूटले रहे। जेकरा बाद एही घटना से खिसियाइल अंगरेज़ सरकार क्रांतिकारी लोग के धर-पकड़ करे ख़ातिर आपन ज़ोर लगईलस आ तमाम क्रांतिकारियन के गिरफ़्तारी भईल आ मुक़दमो चलल। काकोरी षड्यंत्र क ओही मुक़दमा में बिस्मिल, अशफ़ाक़, राजेंद्र लाहिड़ी आ रोशन सिंह के फाँसी के सजा भईल।

साल 1928 में भगत सिंह, चंदरशेखर आज़ाद आ दोसर क्रांतिकारियन के सहजोग से दिल्ली में भईल मीटिंग में एगो नया क्रांतिकारी संगठन बनल, जेकर नाम रखाइल 'हिंदुस्तान समाजबादी प्रजातंत्रिक संघ'। ओही साल साइमन कमीशन हिंदुस्तान आइल, जेकर सँउसे हिंदुस्तान में बिरोध भईल। काहे से कि एह कमीशन क एकहु मेम्बर हिंदुस्तानी ना रहे। पंजाब में साइमन कमीशन क बिरोध करत घरी पुलिस क लाठी चारज में लाला लाजपत राय घाही हो गइलीं। आ कुछो दिन ना

बीत पावल कि नवम्बर 1928 में उहाँ के निधन हो गईल। लाला लाजपत राय क निधन से जब सँउसे देस सोक मनावत रहे, ओही घरी भगत सिंह आ ओनकर संगी लोग लाजपत राय क मौत क बदला लेवे ख़ातिर दिसम्बर 1928 में पुलिस अधिकारी सांडर्स क गोली मारके हत्या क दिहनीं। एही कांड के बाद भगत सिंह, चंदरशेखर आज़ाद आ दोसर क्रांतिकारी साथी भेस बनाके पुलिस के चकमा देके फ़रार हो गइलें। भगत सिंह कलकाता चल गइलें।

ओही घरी अंगरेज़ सरकार दुगो दमनकारी क़ानून के लागू करे ख़ातिर असेम्बली में पूरा ज़ोर लगावत रहे। ई क़ानूनन के नाम रहे – ट्रेड डिस्प्यूट बिल आ पब्लिक सेफ़्टी बिल। एह क़ानून के बिरोध करे ख़ातिर भगत सिंह अप्रैल 1929 में आपन क्रांतिकारी संगी बटुकेस्वर दत्त संगे सेंट्रल असेम्बली में बम फेंकले। इहे ना असेम्बली में ई दुनो क्रांतिकारी 'समराजबाद के नास होखे' आ 'इंक़लाब ज़िंदाबाद' के नारा लगावत आपन गिरफ़्तारी दिहलें। एकरी बाद भगत सिंह आ ओनकर साथी लोग पे मुकदिमा चलल। जेल में रहतो भगत सिंह लगातार आपन क्रांतिकारी बिचार के माँजत रहलीं। अदालत में दिहल ओनकर बयान आ ओ घरी लिखल ओनकर लेख आ ख़त उहाँ के बैचारिक बिकास-यात्रा आ बैग्यानिक समाजबाद में उहाँ के बिस्वास के बानगी देवेलें स।

भगत सिंह एह अरथ में एगो खास क्रांतिकारी रहलें कि उहाँ के हिंदुस्तान क आम लोगन के क्रांति क असिल मतलब समझवलीं। उहाँ के बेबाक़ होके कहलीं कि क्रांति के मतलब बम भा पिस्तौल नइखे, बलुक क्रांति के मतलब बा दिमाग़ी गुलामी से मुकति, प्रगति ख़ातिर बदलाव में बिस्वास

आ मानव-बिकास क रस्ता पे आगे बढ़ला क लालसा। उहाँ के कहनाम रहे कि क्रांति बिसेख सामाजिक-आर्थिक हालत में संभव होखेले आ ओकरा ख़ातिर जरुरी बा कि पहिले जनता के तइयार कइल जाव। बिचार के धरातल प भगत सिंह क्रांतिकारी दल के कार्जक्रम आ ओकर गतिबिधि के बैग्यानिक समाजबाद क साँचा में ढाले के काम कइलें। जून 1929 में सेशन कोरट में दिहल बयान में उहाँ के साफ़े कहनीं कि 'क्रांति ख़ातिर खूनी लड़ाई जरुरी नइखे, आ ना क्रांति में बदला ख़ातिर केवनो जगह बा। ई बम पिस्तौल के सम्प्रदाय नइखे। क्रांति से हमनी के मतलब बा – अनेआय पे टिकल आजु क समाज-बेवस्था में नीचे से लेके ऊपर ले बदलाव।'

हिंदुस्तान आ दुनिया भर क क्रांतिकारी आंदोलन क इतिहासो में भगत सिंह क बड़ा गहिर दिलचस्पी रहे। उहाँ के 'किरती' आ दोसर पत्र-पत्रिकन में क्रांतिकारी आंदोलन क इतिहास प कईगो लेखो लिखले रहलीं। भगत सिंह के बिचार-यात्रा के समझे ख़ातिर ई कुल्ही लेखन के साथ उहाँ के जेल डायरियो पढ़े के चाहीं, जेवन कि उहाँ के असेम्बली में बम फेंकला आ लाहौर षड्यंत्र मामिला में जेल में बंद रहला के दौरान लिखले रहलीं। जेल में बंद रहतो उहाँ के पढ़ाई-लिखाई आ किताबिन से उनकरी गहिर लगाव में केवनो कमी ना आइल। आपन संगी-दोस्तन आ जेल में मिले आवे वाला रिस्तेदारनो से उहाँ के किताब के लगातार फ़रमाइश करत रहीं। इहे ना लाहौर के द्वारकादास लाइब्रेरियो से उहाँ के जेल में हरमेसा किताब मंगावत रहीं। एह लाइब्रेरी के थापना लाला लाजपत राय कइले रहीं आ ए लाइब्रेरी के लाइब्रेरियन राजाराम शास्त्री रहलीं।

भगत सिंह क कहनाम रहे कि ‘क्रांति के तलवार बिचार के धार पे तेज होखेले।’ ख़ुद भगत सिंह के बिचार के धार आ उहाँ के बैचारिक बिकास देखे के होखे त ‘किरती’, ‘अभ्युदय’, ‘प्रताप’ लेखा पत्र-पत्रिकन में बखत-बखत प छपल उहाँ के लेख देखे के चाहीं। अक्टूबर 1930 में उहाँ के आपन सभसे मसहूर लेख लिखलीं, जेकर शीर्षक रहे ‘हम नास्तिक काहे बानीं’। एह लेख में उहाँ के बतवलें बाड़ीं कि उहाँ के नास्तिक कइसे बननीं। काहे ख़ातिर भगवान आ धरम से उहाँ के बिस्वास उठ गइल। अपना पच्छ में उहाँ के बड़ा मज़बूती से तरक रखलें बाड़ीं। पूरा लेख संबाद के ढंग से लिखल बा, मानो उहाँ के आपन संगी-दोस्तन से आ लेख पढ़े वाला पाठकन से बतिया रहल बानीं। भगत सिंह के फाँसी लागला से किछु बखत पहिले ई लेख जेल से भगत सिंह के बाबूजी (सरदार किसन सिंह) के हाथ में चहुँपल। उहाँ के एह लेख के 1931 में ‘द पीपुल’ पत्रिका में छपववलीं, जेवन कि लाहौर से छपत रहे। ई लेख के महत्त्व एह बात से बूझल जा सकेला कि दक्खिन भारत में आतम सम्मान आंदोलन चलावे वाला ईवी रामासामी पेरियार ‘हम नास्तिक काहे बानीं’ के तमिल अनुवाद आपन पत्रिका ‘कुदी अरसु’ में छपले रहलें। आगा चलिके हिंदुस्तान के तमाम भाषा में एकर अनुवाद भइल। देखल जाव त इ लेख के सुरुआत साल 1927 में किरती पत्रिका में छपल दुगो लेख में मिली। ओ दुनो लेखन में भगत सिंह हिंदुस्तान के आज़ादी क लड़ाई आ धरम आउर साम्प्रदायिक दंगा-फ़साद आ ओकरी इलाज के लेके लिखले रहलीं। भगत सिंह एही लेखन में से एगो में लिखले बानीं कि ‘ई कुल्ही धरम मिलिके हिंदुस्तान के बेड़ा डुबो दिहले बाड़न स। आउर अबहीं इहो पता नइखे कि

इ मज़हबी दंगा-फ़साद कब हिंदुस्तान क पीछा छोड़ी। इ दंगा-फ़साद दुनिया क नज़र में हिंदुस्तान के बदनाम क देले बाड़न स।'

आजु क समय में धार्मिक उन्माद फइलवला में मीडिया (प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक आ कि सोशल मीडिया) जेवन भूमिका निभा रहल बा, भगत सिंह के ज़माना में दंगा-फ़साद के माहौल बनावे में ओ घरी के अख़बार उहे भूमिका निभावत रहलें स। भगत सिंह एही बात के खूब समझत रहलीं। उहाँ के इ लिखल बेजायँ नइखे कि अखबारन के असिल काम बा ग्यान आ जानकारी दिहल, लोगन के मन से भेदभाव आ साम्प्रदायिकता के ग़लत सोच हटावल, आपस में मेलजोल बढ़ावल आ हिंदुस्तान क साझा राष्ट्रीयता बनावल। भगत सिंह आगे लिखले बानीं कि आपन असिल काम के ठीक उलटे अख़बार अग्यान फइलावे, लोगन के साम्प्रदायिक बनावे, लड़ाई-झगड़ा करावे आ हिंदुस्तान क साझा राष्ट्रीयता के तोड़े के चक्कर में लागल बाड़न स। गौर करे के बात बा कि इ समस्या के मूल में उहाँ के धरम के साथे-साथ आर्थिक कारनो देखनीं। उहाँ के मानत रहलीं कि 'दुनिया के केवनो काम होखे ओकरा तह में कतों-न-कतों पेट के सवाल जरुर होखेला। एही ख़ातिर उहाँ के लिखलीं कि 'कुल्ही दंगा के एकही इलाज बा हिंदुस्तान क आर्थिक हालत में सुधार कइल, काहे कि हिंदुस्तान के लोगन क आर्थिक हालत एतना ख़राब बा कि केहू चवन्नियो देके एक आदमी से दोसरा के बेइज्जत करा सकेला।' दंगा-फ़साद के जड़ से मिटावे ख़ातिर उहाँ के वरग चेतनो पे ज़ोर दिहनीं। उहाँ के नवजवानन में आपन बिस्वास राख के कहेलीं कि आजु के हिंदुस्तान के नवजवान अपना

के हिंदू, मुसलिम भा सिख ना पहिले इनसान मानेलें स आ फेरु हिंदुस्तानी। कहे के ज़रूरत नइखे कि ओही लेखन में जेवन बिचार सुरुआती रूप में आइल बा उहे आपन बिकसित रूप में 'हम नास्तिक काहे बानीं' में देखाइ देवेला।

आजु हिंदुस्तान में जइसन हालात बन रहल बा - धरम आ धरम के बीच जइसे भेद बढ़त बा, साम्प्रदायिकता आ जातिबाद लेखा समस्या मानो फेरु हिंदुस्तान के लीले ख़ातिर मुँह बा रहल बा – अइसन परीच्छा के घरी में भगत सिंह के कलम हमनीं के रस्ता देखावे के काम कर सकेले। एह लेख के भोजपुरी में अनुवाद कइला के उद्देश्य इहे बा कि इ लेख ढेर-से-ढेर लोगन के पजरी उनकरी आपन भाषा में चहुँपे।

भगत सिंह के ऐतिहासिक लेख के इ भोजपुरी अनुवाद सर्बाधिकार (कॉपीराइट) से मुक्त बा। एकरा के छापे, बाँटे भा ऑनलाइन पोर्टल आ केवनो सोशल मीडिया पे साझा करे ख़ातिर रउआँ सभ स्वतंत्र बानीं। एह ख़ातिर अनुवादक के अनुमति लेवल ज़रूरी नइखे।

- शुभनीत कौशिक

हम नास्तिक काहे बानीं?

एगो नया सबाल खड़ा हो गइल बा – का हम केवनो गुमान के कारन सभका से बलवान, हर जगह मौजूद आ सभ किछु जाने वाला भगवान के होखला पे यक़ीन ना करींला? हम कबहूँ ई ना सोचले रहलीं कि हमरो के अइसन सबाल क सामना करे के होखी। बाकिर आपन संगी-दोस्तन संग बतियावत हमरा के ई महसूस भइल कि हमार किछु दोस्त, जो हमार दोस्ती के दावा बेजायँ ना होखे त, हमरा संगे तनी सम्परक में रहिके ई नतीजा पे चहुँपे ख़ातिर तइयार बाड़न जा कि हम भगवान के होखला के नकारके किछु ढेर आगे बढ़ रहल बानीं, आ कि ई हमार घमंड बा जे हमरा के भगवान पे भरोसा ना करे ख़ातिर उकसा रहल बा। हं त माने के परी कि ई एगो गंभीर समस्या बा। हम बड़-बड़ हांके वाला ना बानीं, आ ना हम इहे कहब कि हम इंसानी कमजोरी से ऊपर उठ गइल बानीं। हमहुं एगो इंसान बानीं एकरा से अधिका किछु ना। केहुंओ एकरा से अधिका किछु होखला के दावा ना कर सकेला। एगो कमजोरी हमरो भीतर बिया। अहंकार हमरी सुभाव के हिस्सा बा। अपना कामरेड संगी लोगन के बीच हमरा के निरंकुस मानल जाला। इहाँ ले कि हमार संगी बटुकेस्वर दत्तो के कभो-कभो इहे लागेला। कई बेरी हमरा के मनमाना कहिके हमार निंदा भइल बा। कई संगी लोग के ई सिकायत बा, आ गंभीर सिकायत बा, कि हम आपन सोच-बिचार ओ लोगन पे थोपींला आ आपन बात मनवा लेवेंली। ई बात एगो हद ले सही बा, हम एकरा से इंकार ना करेलीं। एकरा के अहंवादो

कहल जा सकेला। जहवाँ ले दोसर बिचार से आपन बिचार आ मत के सवाल बा, हमरा के आपन मत पे गुमान बा। बाकिर ई गुमान व्यक्तिगत नइखे। ई हो सकेला कि ई खाली आपन बिस्वास ख़ातिर सही गरब होखे बाकिर एकरा के घमंड ना कहल जा सकेला। घमंड भा सही कहल जाय त अहंकार त अपना ख़ातिर बेजायँ गरब होखल बा। त फेरु का ई बेजायँ गरब बा जवन हमरा के नास्तिकता ओरी ले गइल, आ कि एह मामिला प ख़ूब सोच-बिचार कइला आ पढ़ला के बाद हम भगवान पे अबिस्वास कइलीं? इहे सवाल बा जेकर चरचा हम इहवाँ करे जात बानीं। बाकिर पहिले हम ई बात साफ़ कइ दीं कि अहंबाद आ अहंकार ई दुनो में फ़रक बा।

पहिला बात त हम ई नइखी बूझ पावत कि बेजायँ गरब भा अनेरे अभिमान कइल केंगने भगवान में भरोसा रखला में रोड़ा अटकावेला। हम सही में केवनो महान आदमी के महानता के ना मानी, ई तबे हो सकेला जब हमरा के इचिको अइसन जस मिल गइल होखे जेकरा ख़ातिर हम जोग नईखीं भा हमरा भीतर उ गुन नइखे जेवन कि एकरा बदे जरुरी बा। इहाँ ले त बात समझ में आवेले, बाकिर ई कइसे हो सकेला कि एगो आदमी जेवन कि भगवान में भरोसा राखेला उ आपन व्यक्तिगत गरबई के चलते भगवान में भरोसा बन क देवे? दुगो बात हो सकेला। भा त आदमी अपना के भगवान क प्रतिद्वंद्वी बूझे लागे आ कि उ खुदे आपना के भगवान माने लागे। ई दुनो हालत में उ सच्चा नास्तिक ना बन सकेला। पहिला मामिला में उ आपन प्रतिद्वंद्वी यानी भगवान क मौजूदगी के नकारत नइखे। आ दूसरा मामिलो में उ एगो अइसन चेतना के मौजूद होखला के मानत बा, जेवन कि परदा के पाछे

से प्रकृति के मय काम आ हलचल चला रहल बा। हमनी ख़ातिर ई बात के केवनो महत्त्व नइखे कि उ आपने के परमातमा बुझेला आ कि ई समझेला कि उ परम चेतना ओकरा से हट के किछु आउर बा। मूल बात त दुनो जगह मौजूद बा। ओकर बिस्वास मौजूद बा। उ केनियों से नास्तिक नइखे। त हम ई कहे चाहत रहनीं ह कि हम ए दुनों में से केवनों में ना बाड़ीं, ना त पहिला आ न दोसरके में। हम त उ सभकरा से ताकतवर परमातमा के मौजूदगिये से इंकार कर रहल बानीं। हम काहे इंकार करत बानीं, एकर पड़ताल बाद में कयल जाई। इहाँ एगो बात हम साफ़ कर देवे चाहत बानीं कि केवनो अहंकार भा गरबई के चलते हम नास्तिकता के सिद्धांत ना मानेलीं। हम ना त केहुके प्रतिद्वंद्वी बानीं, ना त अवतार बानीं आ न खुदे परमातमा। एगो बात तय बा कि अहंकार हमरा के ए रास्ता पे ना ले गइल। ई आरोप के ना मानला ख़ातिर आइं किछु अउरी बात पे बिचार कइल जाव। हमरा एह संगी लोगन के मानल जाव त दिल्ली बम केस आ लाहौर षड्यंत्र मामिला से हमरा के जेवन जस मिलल, सायद ओकरे चलते हम अनेरे अभिमान कर रहल बानीं। त आइं फेरु देखल जाव कि का ई बात ठीक बा। हमार नास्तिकताबाद केवनो आजुके बात नइखे। भगवान पे बिस्वास करे त हम तभिये छोड़ दिहले रहनीं जब हमरा के केहू जानतो ना रहे। हमरा बारे में ई संगी-साथी लोग के कुछो ख़बर ना रहे। माने एगो कॉलेज में पढ़े वाला लरिका अनेरे एतना गुमान त नाहिए पाल-पोस सकेला कि उ नास्तिक बने। हँ एतना जरुर बा कि किछु अध्यापक लोग हमरा के पसन करे लोग आ किछु लोग ना पसन करे, पर हम कभो बहुत मेहनती भा पढ़ाकू लरिका ना रहनीं। अहंकार पालला के

मौक़ा कभो हमरा सोझा ना आइल। हम त बहुते लजाउर सुभाव के रहनीं, आ भविष्य ख़ातिर हमार सोच तनी निरासाबादी रहे। आ ओ बखत हम एकदम से नास्तिक ना भइल रहलीं। हमार बाबा, जिनकरा प्रभाव में हम बड़ होखलीं, उ कट्टर आर्यसमाजी रहलें। एगो आर्यसमाजी अउर किछु होखे भा ना होखे, उ नास्तिक ना हो सकेला। आपन सुरुआती पढ़ाई कइला के बाद हम लाहौर के डीएवी स्कूल में दाख़िला लिहलीं आ पूरा एक बरिस ओहिजें हॉस्टल में रहलीं। उहाँ सबेरे-साँझि के बेरा प्रार्थना करे के अलावा हम घंटन गायत्री मंत्रो जपत रहीं। ओ घरी हम पूरा भक्त रहनीं। ओकरी बाद हम आपन बाबूजी के संगे रहे लगलीं। जहवाँ ले धार्मिक रूढ़िबादी होखला के सवाल बा, त उहाँ के एह मामिला में उदारबादी रहनीं। ओनकरे सीख रहे कि हमरा के देस क आज़ादी ख़ातिर आपन जिनगी निछावर करे के प्रेरणा मिलुवे। बाकिर उहाँ के नास्तिक ना बानीं। भगवान में उहाँ के दृढ़ बिस्वास बा। उहाँ के रोज हमरा के पूजा-पाठ करे ख़ातिर कहबो करें। त एह ढंग से हमार पालन-पोसन भइल। जब देस में असहयोग आंदोलन चलत रहे, ओही घरी हम नैसनल कॉलेज में दाख़िला लिहलीं। इहवाँ आके हम धरम के मसला आ भगवान के बारे में खूब थिर होके सोचे-बिचारे लगलीं आ आलोचना सुरु कइलीं। बाकिर ओहु घरी हम पक्का आस्तिक रहलीं। ओह बखत ले हम बेकटल आ सँवरल लमहर बाल राखे लागल रहलीं, बाकी हमरा के सिख भा केवनो दोसर धरम के पुरान-बखान आ सिद्धांत पे भरोसा न रहे। बाकिर ईसर के मौजूदगी में हमार बिस्वास दृढ़ रहे।

एकरा बाद हम क्रांतिकारी पारटी से जुड़ गइनीं। उहवाँ जेवन पहिला नेता से हमार सम्परक भयिल, उ पक्का बिस्वास ना होखला के बावजूद भगवान क मौजूदगी नकरला के हिम्मत न कर सकत रहनीं। जब हम उहाँ से ज़ोर लगाके भगवान के बारे में पूछीं त उहाँ के कहीं कि 'जब मन करे पूजा-पाठ क लिहल करा।' अब ई अइसन नास्तिकता बा जेकरा में ई बिस्वास के अपनाइला ख़ातिर जरुरी हिम्मत के कमी बा। एगो दोसर नेता जहाँ के संपरक में हम आइल रहनीं, उहाँ के पूरा सरधालु रहनीं। उहाँ के नाम बा – आदरनीय कामरेड सचिंदरनाथ सानयाल। आजकल उहाँ के काकोरी षड्यंत्र मामिला में आजीवन कारावास के सजा काट रहल बानीं। उहाँ के नामी किताब 'बंदी जीबन' में पहिले पन्ना से भगवान के महिमा के बड़ा ज़ोर-सोर से बखान बा। ओ किताब के दोसर भाग के आख़िरी पन्ना में उहाँ के रहस्यात्मक वेदांत से प्रेरना लेके ईसर के जेवन बड़ाई कईले बानीं, उ कुल्ही उहाँ के बिचार के एगो बिचित्र हिस्सा बा। 28 जनवरी, 1925 के पूरा हिंदुस्तान में जेवन 'दि रिवॉल्यूशनरी' (क्रांतिकारी) परचा बाँटल गइल रहे, अभियोग पक्ष के मानल जाव त उ परचा उहें के दिमाग़ी मेहनत क नतीजा बा। अब एतना त तय बा कि अइसन गुप्त काम में केवनो अहम नेता आपने बिचार राखेला, जेवन कि ओकरा के खुदे बहुत पसन होखे, आ दोसर कार्जकर्ता लोग के उहाँ से सहमत होखे के होला। उ सगरी मतभेदन के बावजूद जेवन कि हो सकत बाड़न स। ओ परचा में एगो पूरा पैरा सर्बशक्तिमान ईसर आ ओनकर लीला आ काम के बड़ाई से भरल रहे। ई कुल्ही रहस्यबाद बा। हम जेवन बात कहे चाहत बानीं उ ई ह कि ईसर में अबिस्वास के भाव अबहीं

क्रांतिकारियो दल में ना आइल रहे। काकोरी क चार नामी शहीद आपन आख़िर दिन भजन-पूजा में गुज़रले रहे लोग। रामप्रसाद बिस्मिल एगो रूढ़िबादी आर्यसमाजी रहनीं। समाजबाद आ साम्यबाद क आपन बड़हन पढ़ाई के बादो राजेंद्र लाहिड़ी उपनिषद आ गीता के सलोक पढ़ला के आपन इच्छा ना दबा सकनीं। उहाँ सभ में हम एकही आदमी देखनी जे कभो पूजा-पाठ ना करे आ कहे कि 'दर्शनशास्तर आदमी के कमजोरी भा ओकर ग्यान कम होखला के बजह से जन्मेला।' उहाँ के आजीवन देसनिकाला के सजा काट रहल बानीं। बाकिर उहों के ईसर के मौजूदगी नकारला के कबहूँ हिम्मत ना कईनीं।

एही बखत ले हम खाली एगो रोमांटिक आदर्शबादी क्रांतिकारी रहलीं। अबले हमनीं के खाली दोसर लोग के पीछे चलत रहनीं जा, अब आपन कंधा पे ज़िम्मेदारी उठवला के बखत आ गइल रहे। एगो बखत त अइसनो आइल कि पार्टी के बचले नामुमकिन जनाए लागल। कामरेड आ नेता लोग हमार मज़ाक़ उड़ावे सुरु क दिहलें। किछु समय ले त हमरो के ई डर लागल कि कतहूँ एक दिन अइसन ना आवे कि आपन कार्जक्रम के बेकार होखला में हमरो यक़ीन हो जाव। उ हमरे क्रांतिकारी जिनगी के एगो निर्णायक मोड़ रहे। पढ़ला, सोचला-बिचारला क पुकार हमरा मन में होखत रहे – कि बिरोधी लोग जवन तरक देत बाड़न लोग ओकर सामना करे ख़ातिर अध्ययन करा। आपन बिचार क पच्छ में तरक देवे जोग बने ख़ातिर पढ़ा। त हम पढ़े सुरु क दिहलीं। एकरा से हमार पुरान बिचार आ बिस्वास में गजबे बदलाव भइल। हिंसा क तरीक़ा अपनवला क रोमांच, जेवन कि पुरान साथी लोग

में ढेर रहे, के जगह अब गंभीर बिचार ले लिहल। रहस्यबाद भा अंधबिस्वास ख़ातिर अब केवनो जगह ना रही गइल। यथार्थबाद हमार आधार बनल। हिंसा खाली तबे न्यायोचित बा जब केवनो बिकट ज़रूरत में ओकर सहारा लिहल जाव। अहिंसा सगरी जनांदोलनन के जरुरी सिद्धांत होखे के चाहीं। ई त रहल तरीक़ा के बात। सभका ले जरुरी बात बा ओ आदर्श के साफ़ समझ, जेवना ख़ातिर हमनी के लड़े के बा। चूँकि ओ बखत केवनो खास क्रांतिकारी काम न होखत रहे, त हमरा के दुनिया भर के क्रांति के तमाम आदर्श जाने आ पढ़े के खूब मौक़ा मिलल। हम अराजकताबादी नेता बकुनिन के पढ़नीं, तनी साम्यबाद क पिता मार्क्स के, बाकिर ढेर लेनिन, त्रातसकी आ दोसर लोग के पढ़नीं, जे लोग आपन देस में सफल क्रांति कइले रहे । ई कुल्ही लोग नास्तिक रहे। बकुनिन के किताब ‘ईसर आ राज्य’ एही बिषय पे, पूरा ना सही, तबो एगो नीमन अध्ययन बा। बाद में, हमरा के निरलंब स्वामी के लिखल किताब ‘सहज ग्यान’ मिलुए। एकरा में खाली एगो रहस्यबादी नास्तिकता रहे। एही बिषय में हमार ढेर रुझान हो गइल। 1926 के आख़िर ले हमरा के ई बात के यक़ीन हो गइल कि सर्बशक्तिमान परमातमा के बात – जे ब्रह्मांड बनावल, ओके दिसा देखावल आ चलावता – एगो बकबाद बा। हम आपन अबिस्वास सभका सोझा रखनीं। एही बिषय पे आपन संगी लोग से बहस कईनीं। हम एगो घोषित नास्तिक हो चुकल रहलीं। बाकिर एकर मतलब का रहे, ई हम आगे बताइब।

मई 1927 में लाहौर में हमार गिरफ़्तारी भइल। ई गिरफ़्तारी अचके भइल। हमरा के इचिको अहसास ना रहे कि पुलिस हमार तलास करत बिया। एक दिने अचके जब हम एगो बगइचा से जात रहनीं, हमरा के पुलिस वाला घेर लिहलन स। हमरा के एह बात पे खुदे अचरज भइल कि हम ओ घरी बहुत शांत रहलीं। हमरा के ना त केवनो सनसनी महसूस भइल, ना इचिको उत्तेजना के अनुभव होखल। पुलिस हमरा के हिरासत में ले लिहलस। अगिला दिने हमरा के रेलवे पुलिस क हवालात में ले जाइल गइल, जहवाँ हमरा के एक महीना जेल में काटे के परल। पुलिस अफ़सरन से कई दिन जेवन बात भइल त ओकरा से ई लागल कि पुलिस के काकोरी दल के साथ हमार जुड़ाव के आ क्रांतिकारी आंदोलन में हमार हिस्सेदारी के किछु ख़बर बा। उ लोग हमरा के बतावल कि 'हम लखनऊ में रहनीं जब उहाँ मुकदिमा चलत रहे, कि हम ओ घरी क्रांतिकारियन के छोड़ावे ख़ातिर योजना पे बात कईले रहनीं, आ क्रांतिकारी लोग के सहमति मिलला के बाद हमनी के किछु बम हासिल कइनी जा, आ कि 1926 में दसहरा के मौक़ा पे उ बम में से एगो के परिच्छन ख़ातिर ओकरा के भीड़ पे फेंकल गइल। ओकरी बाद हमार भलाई ख़ातिर पुलिस वाला लोग हमरा के बतावल कि 'अगर हम क्रांतिकारी दल क काम क बारे में एगो बयान दे दिहीं त हमार गिरफ़्तारी ना होखी आ इनाम दिहल जाई।' पुलिस क ई प्रस्ताव पे हमरा के हँसी आइल। ई कुल्ही बेकार के बात रहे। हमनी लेखा बिचार राखे वाला लोग आपन निर्दोख जनता पे बम ना फेंकेले। एक दिने फजीरे

सीआईडी के एगो बड़का अधिकारी न्यूमन हमरा लगी अइलन। उहाँ के सहानुभूति देखावत बड़ा लम्बा-चौड़ा बात कइलन आ फेरु आपन जान में हमरा के ई दुखद ख़बर दिहलन कि जो हम उनकरी हिसाब से बयान ना दिहलीं त उ हमरा पे काकोरी केस के मामिला में बिद्रोह सुरु करे बदे षड्यंत्र करे आ दसहरा बम कांड में क्रूर हत्या करे के मुक़दमा चलावे ख़ातिर मजबूर होखिहें। आ आगे उ हमरा के इहो बतवलन कि उनका लगे हमरा के सजा दियावे आ फाँसी चढ़ावे ख़ातिर जरुरी सबूत मौजूद बा। हालाँकि हम बिलकुल निर्दोख रहनीं तबो ओ घरी हमरा के बिस्वास रहे कि जो पुलिस चाही त अइसन कर सकत बिया। ओही दिन से किछु पुलिस वाला हमरा के नियम से दुनो बेरा भगवान के प्रार्थना करे ख़ातिर फुसलावे लगलन स। बाकिर अब हम नास्तिक हो चुकल रहनीं। हम अपना ख़ातिर ई बात तय करे चाहत रहनीं कि का खाली शांति भा ख़ुशी के घरी हम नास्तिक होखला के दंभ भरेलीं। आ कि मुसकिल घरीयो में हम आपन सिद्धांत पे अडिग रह सकेलीं? खूब सोचला के बाद हम ई फ़ैसला कइलीं कि ईसर पे बिस्वास भा प्रार्थना हम केहू तरे ना कर सकेलीं। हम एकहु छन ख़ातिर अरदास ना कइनीं। इहे असिल परिच्छन रहे आ एकरा में हम सफल रहलीं। एको छन के हमरा के दोसर बातन क क़ीमत प आपन गरदन बचावे के लालसा न भइल। अब हम एगो पक्का नास्तिक रहलीं आ तभे से लगातार बानीं। एह परिच्छा में खरा उतरल आसान काम ना रहे। 'बिस्वास' दुःख-दरद के हलुक क देवेला, इहाँ ले कि ओकरा के सुखकरो बना देवेला। ईसर से आदमी के संतवना ख़ातिर एगो आधार मिल जाला। 'ओकरा' बिना मनई के अपने ऊपर भरोसा

करेके पड़ेला। आन्ही-तूफ़ान के बेरा आपन गोड़ पे खड़ा रहल, केवनो लइकन के खेला नइखे। परिच्छा के एह घरी में अहंकार जो बाटे त उ भाप लेखा उड़ी जाला आ आदमी ओही आम बिस्वास के ठुकरावला के हिम्मत न जुटा पावेला। आ जो हिम्मत करेला, त एकर इहे मतलब बा कि ओकरा लगे अहंकार ना केवनो दोसर शक्ति बाटे। आजु एकदम इहे हालत बा। मोकदिमा के फ़ैसला का होखी ई पहिलहिं से पता बा। एक हफ़्ता के भीतरे फ़ैसला सुना दिहल जाई। हम आपन जिनगी एगो ध्येय ख़ातिर कुरबान करे जात बानीं, एही बिचार के छोड़के दोसर केवनो संतवना आउर का हो सकेला। ईसर में बिस्वास राखे वाला एगो हिंदू फेरु से जनम लेवला प राजा होखला के आसा कर सकेला, एगो मुसलमान भा ईसाई सरग में समृद्धि के अनन्द लेवे के भा आपन तकलीफ़ आ कुरबानी ख़ातिर इनाम के कल्पना कर सकेला। बाकिर हम केवना बात के आसा करीं। हम त जानत बानीं कि जेवना घरी रसरी के फंदा हमरी गरदन पे लागी आ हमरी गोड़ के नीचे से तख्ता हटी, उहे पूर्ण विराम होखी – उहे आख़िरी छन होखी। हम, भा अध्यात्म के भाषा के मुताबिक़ कहल जाव त, हमार आतमा सभे किछु ओहिजे खतम हो जाई। आगे कछहु ना बाची। एगो छोट खानी जूझे वाला जिनगी, जेकर केवनो गरबसाली अंत नइखे, अपने में एगो इनाम होखी, जो हमरा में ओकरा के एह नज़र से देखला के हिम्मत होखे। इहे सब किछु बा। बिना केवनो स्वारथ के, इहवाँ भा इहवाँ के बाद केवनो इनाम के लालसा कइला बग़ैर, हम आपन जिनगी के आज़ादी हासिल करे ख़ातिर समर्पित क दिहनी, काहे कि हम आउरी किछु ना कर सकत रहनीं। जेवना दिन हमनी के ई बिचार राखे वाला

ढेर मरद-औरत मिल जइहें, जे आपन जिनगी के इनसान के सेवा आ इंसानियत के उद्धार कइला के सिवा कतों आउरी देई ना सकेलें, ओही दिने मुकति के जुग के सुरुआत होखी। ई लोग शोषक, उत्पीड़क आ अत्याचारियन के चुनौती देवे ख़ातिर तैयार होईहें। एह ख़ातिर नाहीं कि उनकरा के राजा बने के बा भा केवनो इनाम हासिल करे के बा – इहाँ भा अगिला जनम में आ कि मरला के बाद सरग में। ओही लोगन के त इंसानियत के गरदन से दासता आ गुलामी के जुआठ उतार के फेंके के बा आ मुकति आ शांति बनावे ख़ातिर एही राह के अपनावे के होखी। का उ लोग ओही रस्ता पे चलिहें जा, जेवन ओनकरा ख़ातिर भले ख़तरनाक होखे, बाकिर ओनकरा महान आतमा ख़ातिर इकलौता शानदार रस्ता बा? का आपन ध्येय ख़ातिर ओही लोगन के गरब के अहंकार कहिके ओकर ग़लत अरथ लगावल जाई। अइसन घृणा करे लायक़ बिसेखन लगवला के हिम्मत के करेला। हमार कहनाम बा कि अइसन आदमी या त मूरख बा भा धूर्त बा। हमनी के चाहीं कि हमनी के ओकरा के माफ़ कय दिहल जाय, काहेकि ओकरा दिल में उ बड़ बिचार, भावना, आवेग भा ओकर गहिराई के महसूस ना कर सकेला। ओकर दिल एगो माँस के टुकड़ा लेखा बेजान बा। ओकर आँख स्वारथ के प्रेत के छाहिं पड़ला से कमजोर हो गईल बिया। अपना ऊपर भरोसा कइला के गुन के हमेसा अहंकार कहल जा सकेला। ई दुख आ तकलीफ़ देवे वाला बा, बाकिर एकरा अलावा चारे का बा?

रउआँ जाइं आ केवनो प्रचलित धरम के विरोध करीं; केवनो अइसन हीरो भा महान आदमी के आलोचना करीं – जेकरा बारे में लोग ई मानेला कि उ आलोचना से ऊपर बा काहे कि ओकरा से केवनो गलती होखिए ना सकेला, तब राउर तरक के ताक़त लोगन के रउआँ पे अनेरे अभिमान कइला क आरोप लगावे ख़ातिर मजबूर क देई। ई दिमाग़ी जड़ता के कारन होखेला। आलोचना आ स्वतंत्र बिचार – ई दुनो एगो क्रांतिकारी के जरुरी गुन बा। महातमा जी महान बाड़ें एही ख़ातिर केहूँके उनकर आलोचना ना करेके चाहीं। उ ऊपर उठ गइल बाड़ें, एहिसे उ कुल्ही बात, जवन उ कहेलें – चाहे उ राजनीति के हो आ कि धरम, अरथ भा नीति के – मय सही बा। रउआँ के यक़ीन होखे भा ना होखे, बाकिर रउआँ के कहेके पड़ी कि 'हँ, इहे सच बा।' अइसन सोच तरक्की के ओर ना ले जा सकेले। ई त साफ़-साफ़ प्रतिक्रियाबादी सोच बा।

काहेकि हमनी के पुरखा केवनो परमातमा (सभका से ताकतवर भगवान) में आपन बिस्वास बना लिहले रहे लोग, एहिसे केवनो अइसन आदमी जे ओ बिस्वास क सचाई भा ओ परमातमा के होखला के चुनौती देई, उ बिधर्मी आ बिस्वासघाती कहल जाई। जो ओकर तरक अइसन बाटे कि कुतरक कइके ओकरा के काटल ना जा सके आ ओकर आस्था एतना मज़बूत बा कि भगवान के परकोप से टूटे वाला बिपत के डर देखाके ओकरा के दबावल ना जा सके, तब ओकर इहे कहिके निंदा होखी कि उ झूठे अभिमान करेला, कि ओकर सुभाव पे अहंकार हावी बा। त ई बेकार के बिबाद पे समय नकसान कइला के का फ़ायदा? फेरु ए कुल्ही बातन पे बहस कइला के कोसिस

काहे? ई लमहर बहस एह ख़ातिर कि जनता के सोझा ई सवाल आजु पहिली बेर आइल बा, आ आजुए पहिली बेर एही मसला पे नीमन ढंग से बग़ैर केवनो पच्छ लिहले चरचा हो रहल बा।

जहवाँ ले पहिला सवाल के बात बा, हमार समझ में हम साफ़ क देले बानीं कि ई हमार अहंकार ना रहे, जे हमरा के नास्तिक होखे के रस्ता पे ले गइल। हमार तरक के तरीक़ा ठीक बा कि ना, एकर फ़ैसला हमरा के ना हमार पाठकन के करेके बा। हम जानत बानीं कि आजु के हालत में भगवान पे बिस्वास कइला से हमार जिनगी आसान आ हमार बोझ हलुक भ गइल रहित। हमार अबिस्वास के चलते सगरी माहौल बहुते सूखा हो गइल बा आ जेवन हालात बा उ बहुते कठोर हो सकेला। इचिको रहस्यबाद एकरा के कबिताई से भर सकेला। बाकिर हमरा भाग के केवनो उन्माद के सहारा ना चाहीं। हम यथार्थबादी बानीं। हम बिबेक से आपन दिल-दिमाग़ पे जीत हासिल करल चाहत बानीं। एही लक्ष्य में हम हरमेसा सफल ना भइल बानीं। बाकिर प्रयास कइल इंसान के हाथ में बा ओकर करतब बा, जीत मिलल भा ना मिलल त संजोग आ हलात पे टिकल बा।

दोसर सवाल, कि जो ई अहंकार ना बा, त भगवान के होखला के लेके प्राचीन आ आजुओ बिदमान सरधा पे अबिस्वास कइला के केवनो कारन त होखे के चाहीं। जी हँ, अब हम एही बात पे आ रहल बानीं। कारन बाटे कि केवनो इनसान जेकरा में सोचला-समझला के इचिको बिबेक होखी, उ आपन माहौल के तार्किक ढंग से समझल चाही। जहवाँ सोझा परमान नइखे उहाँ दरसनसास्तर आपन खास जगह बना लेवेला। जइसन कि हम पहिलहिं कहनी हँ, हमार क्रांतिकारी संगी लोग कहे कि

दरसनसास्तर इनसान के कमजोर भा दुबर होखला के नतीजा बा। जब हमनी के पुरखा लोग फ़ुरसत के घरी दुनिया के रहस्य के, एकर भूत, बर्तमान आ भविष्य के, काहे आ कहवाँ दुनिया आ इनसान के जनम होखल लेखा सवालन के समझे-बुझे के कोसिस कइलें त सीधा परमान के ना भेंटाइला प हर आदमी आपन-आपन ढंग से एह सवालन के हल निकरलस। इहे वजह बा कि तमाम धरम-बिस्वास आ मत के भीतरी हमनी के एतना भेद मिलेला कि कभो-कभो त उ झगड़ा-फ़साद आ मनमुटौवल के रूप ले लेवेला। खाली पूरब आ पच्छिम के दरसन में भेद नइखे, बलुक हर गोलार्ध के अलगा-अलगा मतन में फ़रक बा। एसिया के धरम इस्लाम आ हिंदू धरम में केवनो एकरूपता नइखे। भारते में बौध आ जैन धरम ओ ब्राह्मनबाद से बहुते अलग बा, जेकरा में खुदे आर्य समाज आ सनातन धरम लेखा बिरोधी मत पावल जाने स। पुरान समय के एगो अउर आज़ाद बिचारक चार्वाक बाड़ें। उहाँ के पुराना ज़माना में भगवान के चुनौती दिहले रहीं। ई कुल्ही मत एक-दूसरा से मूल सबालन पे भेद राखेलन स आ हर आदमी अपना के सही बुझेला। इहे त दुरभाग के बात बा। बजाय ई कइला के कि पुरान ज़माना के बिद्वान आ बिचारक लोग के अनुभव आ बिचार के भविष्य में अग्यानता के खेलाफ लड़ाई क आधार बनावल जाव आ एही रहस्यमय सबाल के हल कइला के कोसिस कइल जाव। हमनी के आलसियन लेखा, जेवन कि हमनी के सिद्ध हो चुकल बानीं जा, ओनकर कहल में अडिग आ केवनो संशय के बिना बिस्वास कइके, चीख-पुकार मचावत रहेलीं जा। आ ए तरी हमनी के इंसानियत के तरक्की के जड़ बनवला के अपराधी बाड़ीं जा।

हरेक आदमी के, जे बिकास ख़ातिर खड़ा बा, रूढ़ हो चुकल बिस्वास के आलोचना करे के होखी, ओकरा पे अबिस्वास करे के पड़ी आ ओके चुनौती देवे के पड़ी। हरेक प्रचलित धरम आ मत के एक-एक बात के हर कोना से तरक के कसौटी पे कसे के होखी। जो खूब तरक के बादो उ केवनो सिद्धांत भा दरसन ख़ातिर प्रेरित बा, त ओकर बिस्वास के स्वागत बा। ओकर तरक झूठ, भरम, छल आ कभो-कभो मिथ्या हो सकेला। बाकिर ओकरा के सुधारल जा सकेला काहेकि बिबेक ओकरी जिनगी के दिसा दिखावेला, बाकिर निछान बिस्वास भा अंधबिस्वास ख़तरनाक बा। ई दिमाग़ के मूरख आ आदमी के प्रतिक्रियाबादी बना देवेला। जवन मनई अपना के यथारथबादी होखला के दावा करेला ओकरा के सगरी पुरान बिस्वासन के चुनौती देवे के होखी। आ जो उ बिस्वास तरक के चोट ना सही सकिहें त टुकी-टुकी होके गिर पड़ीहें स। ओही घरी ओ आदमी के पहिला काम होखी, मय पुरान बिस्वासन के ढाहि के नया दरसन के थापना ख़ातिर जगह बनावल। ई त नकारात्मक पच्छ भईल। एकरा बाद सही काम सुरु होखी, जेकरा में फेरु से बनावे ख़ातिर पुरान बिस्वासन के किछु बात के इस्तेमाल कइल जा सकेला। जहवाँ ले हमार तालुक बा, हम सुरुवे से मानेलीं कि एही दिसा में हम अबहीं ले केवनो खास पढ़ाई ना क पइले बानीं। एशिया के दरसन के पढ़े के हमार बड़ लालसा रहे, बाकिर एकर संजोग ना बन पावल। बाकिर जहवाँ ले एह बिबाद के नकारात्मक पच्छ के बात बा हम पुरान बिस्वासन पे सवाल उठावे ख़ातिर आश्वस्त बाड़ीं। हमरा के पूरा भरोसा बा कि केवनो अइसन चेतन, परमातमा के मौजूदगी नइखे, जे प्रकृति के चलावेला आ ओकरा के दिसा

देखावे ला। हम प्रकृति में बिस्वास करींला आ ई बात जानींला कि कुल्ही बिकास के उद्देस आदमी क अपना ख़ातिर प्रकृति पे जीत हासिल कइल बाटे। एकरा के दिसा देवे ख़ातिर केवनो चेतन शक्ति एकरा पाछे नइखे। इहे हमार दरसन बा।

जहवाँ ले नकारात्मक पच्छ के बात बा, हम आस्तिकन से किछु सबाल करल चाहब –

1. जो, जइसन कि राउर बिस्वास बा, एगो सभका से समरथ, कुल्ही जगह मौजूद आ सभ किछु जाने वाला भगवान बाड़ें, जे ए पृथिवी भा दुनिया के रचले बाड़न, त किरपा कइके हमरा के बताईं कि ई काम उ काहे ख़ातिर कइलन? तकलीफ़ आ आफ़त से भरल ई दुनिया, जहवाँ दुःख के केवनो सीमा नइखे आ हज़ार किसिम के बेड़ी से आदमी जकड़ल बा। ई दुनिया जहवाँ एकहु आदमी खुस नइखे!

अब रउआँ ई मत कहीं कि इहे भगवान के क़ायदा बा। काहे कि जो उहो केवनो नियम से बँधल बाड़न त उ सभका से समरथ ना हवें। फेरु त उ हमनिये नियर ग़ुलाम बाड़न। किरपा करके इहो मत कहीं कि ई उनकर शग़ल बा। नीरो त खाली एगो रोम के जलाके राख कइले रहे। किछु लोगन के जान मरले रहे। उ त तनिके दुःख दिहले रहे, आपन सऊख आ मन बहलावे ख़ातिर। आ इतिहास में ओकर का जगह बा? ओकरा के इतिहासकार लोग का नाम से बोलावेला? कुल्ही बिसैला बिसेखन ओकरा ऊपर बरसावल जाला। ज़ालिम, निठुर, शैतान लेखा शब्दन से ओकर बुराई में किताब भरल बाड़ीं स। एगो चंगेज़ खाँ आपन आनंद ख़ातिर कई हज़ार लोग के जान ले लिहलस, आ आजु हमनी

के ओकरा नाम से घृणा करेलीं जा। तब फेरु तू ओ सभका से समरथ अनंत नीरो (माने भगवान) के, जे हर दिन, हर घरी लोगन के दुःख देत बाड़न आ अबहियों देत बाड़न, के तरी सही कह रहल बाड़? फेरु तू ओनकर दुष्कर्म के केंगने हिमायत करबा, जे हर घरी चंगेज़ो के दुष्कर्म के पीछे छोड़ देत बाड़न। हम पूछत बानीं कि उहाँ के ई दुनिया आख़िर बनइबे काहे कइलन? अइसन दुनिया जेवन साँचहुँ नरक बा, जहवाँ दुःख-दरद के केवनो ओरे-अंत नइखे। सभका से समरथ भगवान मनई के काहे बनावलन, जबकि उहाँ के चहतीं त ना बनउतीं। ई कुल्ही बातन के तोहरा लगे का जबाब बा? तु कहबा कि ई कुल्ही अगिला जनम में, निर्दोख आ दरद सहे वाला लोगन के इनाम देवे ख़ातिर आ गलती करे वालन के दंड देवे ख़ातिर हो रहल बा। ठीक बा, ठीक बा। तु कब ले ओ आदमी के सही कहत रहबा, जे हमनी के देहीं पे ज़ख़्म दिहला के हिम्मत करेला कि बाद में ओही ज़ख़्म पे उ मलहम लगाई। ग्लैडिएटर संस्था चलावे वाला लोगन के ई काम कहवाँ ले ठीक रहे कि एगो भूखाइल शेर के सोझा एगो आदमी के फेंकी दा, आ जो उ आदमी भूखाइल शेर से आपन जान बचा लिही त ओकर खूब सेवा आ देखभाल कइल जाई। एही ख़ातिर हम पूछत बानीं, 'उ परम चेतना आ सभका से ऊपर के सत्ता ई दुनिया आ ओमें इनसान के काहे बनवलस? खाली आनंद लेवे ख़ातिर? त ओकरा में आ नीरो में का फ़रक बा?"

मुसलमान आ ईसाई लोग! हिंदू दरसन के लगे अबहीं आउरो तरक हो सकेला। हम तोहरा से पूछत बाड़ीं कि तोहरा लगे ई सबालन के का जबाब बा? तु त पुनरजनम में बिस्वास ना करेला। तु त हिंदू

लोगन के नाईं इहो ना कह सकत बाड़ा कि निर्दोख आदमी जेवन दुःख दरद पावत बा उ ओकरी पिछिला जनम के कुकरम के फल बा। हम तोहसे पूछत बाड़ीं कि उ सभका से समरथ भगवान दुनिया के बनावे ख़ातिर छह दिन मेहनत काहे कइलन आ ई काहे कहलें कि कुल्ही ठीक बा। उहाँ के आजुवे बोलाव, आ ई कुल्ही पिछिला इतिहास देखावा। आजु के हालात के समझे-बुझे दा। फेरु हमनी के देखब जा कि का तबो उ ई कहेके हिम्मत जुटावेलन कि कुल्ही ठीक बा!

जेल के काल-कोठरी से लेके, झोपड़ी आ बस्तियन में भूख से तड़फे वाला लाखन-लाख आदमी, शोसित मजदुरन से लेके, जेवन कि पूँजीबादी पिसाचन द्वारा आपन खून चूसला के धीरज धरी के भा कहे के परी कि उम्मीद छोड़ी के देख रहल बाड़न। आ भगवान इनसान के शक्ति के बरबादी देख रहल बाड़न, जेकरा के देखी के केवनो मनई, जे इचिको जानकार बा, डर के मारे सिहरे लागी। आ अधिक उत्पाद के जरूरतमंद लोगन में बाँटला के बजाय समुंदर में फेंकी दिहला के ठीक समझे वाला राजा लोग के उ महलन ले, जेकरा नींव में इनसान के हड्डी पड़ल बाड़ीं स... उहाँ के ई कुल्ही देखे दा आ फेरु उ कहें कि 'कुल्ही ठीक बा'। काहे आ केवना ख़ातिर? इहे हमार सबाल बा। तु लोग चुप बाड़ा? ठीक बा, त हम आपन बात आगे बढ़ावत बानीं।

आ हिंदू लोग, तु लोग कहेला कि आजु जे लोग दरद आ तकलीफ़ पावत बाड़न उ लोग पिछिलका जनम में पाप कइले रहे। ठीक बा। तु कहत बाड़ा कि आजु के उत्पीड़क पिछिला जनम में साधु-संत रहलें जा, एही ख़ातिर उ लोग सत्ता के मज़ा लूट रहल बा। माने के पड़ी कि राउर पुरखा लोग बड़ा

चलाक रहे हो। उ लोग अइसन सिद्धांत गढ़लन जेकरा में तरक आ अबिस्वास के कुल्ही प्रयास के बेफल बनावला ख़ातिर खूब ताक़त बा। बाक़ी हमनीं के देखे के परी कि ई कुल्ही बात कहवाँ ले टिकेले?

नेआयसास्तर के नामी-गिरामी बिद्वानन के मानल जाव त, मुजरिम पे पड़े वाले असर के लिहाज़ से केवनो दंड के खाली तीने-चार गो वजह से सही कहल जा सकेला। ई वजह बाड़ीं स – बदला, डर आ सुधार। आजु कुल्ही तरक्कीपसन बिचारक लोग बदला लेवे के सिद्धांत के निंदा करेला। डरावे वाला सिद्धांतो के अंत उहे बा। खाली सुधार करे के सिद्धांत जरुरी बाटे आ इंसानियत के तरक्की के अटूट हिस्सा बा। एकर उद्देश्य मुजरिम के एगो काबिल आ शांति पसन करे वाला नागरिक लेखा समाज में लउटावे के बा। बाकिर जो ई बात के मानियो लिहल जाव कि किछु इनसान पिछिला जनम में पाप कइले रहलें स त भगवान द्वारा उनकरा के दिहल सजा कइसन बाटे? तु कहत बाड़ा कि भगवान ओ कुल्हिन के गाय, बिलाइ, पेड़, जड़ी-बूटी भा जनावर बनाके पैदा करेला। तु लोग अइसन चौरासी लाख सजा के गिनावेला। हम पूछत बानीं कि सुधारक के रूप में इनसान पे ई कुल्ही के का असर बा। तु अइसन केतना आदमिन से मिलल बाड़ा जे ई कहेला कि केवनो पाप कइला के चलते पिछिला जनम में उ गदहा के जनम पावलें रहलें? आपन पुराण से उदाहरण मत दिहीं। हमरा लगे तोहार कथा-पुराण ख़ातिर केवनो जगह नइखे। आउर फेरु का तोहके ई पता बा कि दुनिया में सभका से बड़ पाप गरीब होखल बा? ग़रीबी एगो सराप बा, एगो दंड बा। हम पूछत बानीं कि अपराध

बिग्यान नेआयसास्तर के एगो अइसन जानकार के रउआँ कभो तारीफ़ करब जे केवनो अइसन दंड प्रक्रिया के बेवस्था करे जेवन कि आदमी के आउरी जुरम करे ख़ातिर मजबूर करे? त बताईं राउर भगवान ई कुल्ही बात का ना सोचले रहलन? आ कि ओनकरो के ई सगरी बात इनसानियत के एतना तकलीफ़ झेलला के क़ीमत पे आ ओकरे अनुभव से सीखे के रहे? तु का सोचेला कि केवनो गरीब आ अनपढ़ परिबार, जइसे एगो चमार भा मेहतर के इहाँ पैदा होखला पे इनसान के भाग का होखी? काहे कि उ गरीब बा, उ पढ़ाई ना कर सकेला। उ आपन उ संगी-दोस्तन से भी दुतकारल जाला, जेकि ऊँच जात में पैदा होखला के बजह से अपना के ऊँच समझेला। ओकर अग्यान, ओकर ग़रीबी आ ओकरा साथ होखे वाला बेवहार ओकरा के समाज के प्रति निठुर बना देवेला। मान ल, जो उ केवनो पाप करेला त ओकर फल के भोगी? भगवान आ कि उ खुदे आ कि समाज के बड़का मनीषी लोग? आ ओही लोगन के सजा के लेके का कहबा जिनकरा के दम्भी आ घमंडी बाभन सभ जान-बूझिके अग्यानी बनइले रखलन स आ जेकरा के राउर ग्यान के पवित्र किताब बेद के किछु बाक्य सुनला ख़ातिर कान में पिघलल सीसा क धार सहे के सजा भोगे के पड़त रहे? जो उ सभ केवनो जुरम करेलन त ओकरा ख़ातिर के ज़िम्मेदार होखी आ ओकर चोट के सही? हमार प्रिय संगी-साथी लोग! ई कुल्ही सिद्धांत ओही लोगन के खोजल बाड़न स जेकरा के समाज में खास अधिकार मिलल बा। ई लोग आपन हथियावल ताक़त, सम्पत्ति आ उच्चता के एही सिद्धांत के बुनियाद पे सही ठहरावेला। सायद अपटन सिनक्लेयर कतहूँ लिखले बाड़न कि ‘इनसान के खाली

आतमा के अमर होखला में बिस्वास दिया द आ ओकरा बाद ओकर सगरी सर-समान लूटि ला। उ बिना किछु बोलले एही काम में खुदे तोहार मदद करी।' धरम के उपदेस देवे वाला लोग आ सत्ता क मालिक लोग के मेल-मिलापे से जेल, फाँसीघर, कोड़ा आ ई सगरी सिद्धांत उपजेलें स।

हम पूछत बानीं कि तोहार भगवान हर आदमी के ओही घरी काहे ना रोकेलें जब उ केवनो पाप भा जुरम करत रहेला? ई काम त उ बहुते आसानी से कर सकेलें। उ काहे ना लड़ाकू रजवन के भा ओ कुल्हिन के भितर के लड़े के उन्माद खतम क दिहलें आउर ए तरे बिस्वजुद्ध से इनसानियत पे टूटे वाला बिपत से काहे ना बचवलें। उ अंगरेजन के दिमाग़ में हिंदुस्तान के आज़ाद करे ख़ातिर भावना काहे ना पैदा कइलें? उ काहे ना पूँजीपतियन के दिल में दोसरा के भलाई कइला के भाव भर देत बाड़ें जेसे कि उ सभ उत्पादन क साधन के आपन सम्पत्ति मानल छोड़ी देस। आ ए तरे ना खाली सगरी मजूर समाज, बलुक सगरी मानव समाज के पूँजीबाद के बेड़ी से आज़ाद करें।

रउआँ समाजबाद के बेवहारिक होखला पे तरक करे चाहत बानीं, हम एकरा के राउर सभका से बलवान भगवान पे छोड़ देत बानीं कि उहे एकरा के लागू करें। जहवाँ ले आम लोगन के भलाई के बात बा, लोग-बाग समाजबाद के गुन मानेलें, बाक़ी उ एकर बेवहारिक ना होखला के बहाना बनाके एकर बिरोध करेलें। चलीं, राउर परमातमा आवें आ उ सगरी चीज़ के सही कर देवें। अब रउआँ घुमा-फिराके तरक नत करीं, ई कुल्ही बेकार के बात बा। हम रउआँ के बता दिहीं कि अंगरेजन के हकूमत एहिंजा ए ख़ातिर नइखे कि भगवान चाहत बाड़ें, बलुक एह बदे बा कि अंगरेजन के पजरी

ताक़त बिया आ हमनीं में अंगरेजन के बिरोध करेके हिम्मत नइखे। अंगरेज़ हमनी के आपन प्रभुत्त्व में भगवान के मदद से ना रखले बाड़न स, बलुक बनूक़, राइफ़ल, बम आ गोली, पुलिस आ सेना के बल पे हमनी के ग़ुलाम बनाके रखले बाड़न स। ई हमनी के उदासीनता बा कि उ कुल समाज के खेलाफ सभका से उरेब जुरम कर रहल बाड़न स यानी एक देस दोसरी देस पे जुलुम आ शोसन क रहल बा? कहाँ बाड़ें भगवान? उ का कर रहल बाड़ें? का उ इनसान के तकलीफ़ में देखी के मज़ा ले रहल बाड़न? ना, उ भगवान ना, नीरो बा, चंगेज़ बा, ओकर नास होखे।

का तु हमरा से ई पूछत बाड़ा कि हम एह दुनिया के उत्पत्ति आ इनसान के उत्पत्ति के कइसे समझा सकेलीं? ठीक बा, हम तोहके बतावत बानीं। चार्ल्स डारविन एह मुद्दा पे बहुत किछु लिखले बाड़न। ओकरा के पढ़ा। निरलंब स्वामी के 'सहज ग्यान' पढ़ा। तोहरा के एही सबाल के किछु हद तक जबाब मिल जाई। दुनिया के बनल एगो प्राकृतिक घटना बा। अकासगंगा के आकार में, तमाम पदारथ के अचके मिलला से ई धरती आ संसार बनल। कब बनल? एकरा ख़ातिर इतिहास देखा। अइसने घटना से जनावर पैदा भइलन स आ बहुत बखत बीतला के बाद इनसान पैदा भईल। डारविन के लिखल 'जीव के उत्पत्ति' पढ़ा। आ ओकरी बाद सगरी बिकास इनसान द्वारा प्रकृति से लगातार संघर्ष आ ओकरा पे जीत हासिल करेके लालसा से होखल बा। ई एह घटना के सायद सबसे छोट व्याख्या बा।

तोहार दोसर तरक ई हो सकत बा कि काहे एगो लइका आन्हर भा लँगड़ पैदा होखेला, जो ई ओकर पिछिला जनम में कइल पापन के फल नइखे? जीवविग्यान के जनकार लोग एह मसला के वैज्ञानिक समाधान निकलले बाड़ें। ओनकरा मते एकर सगरी ज़िम्मा माई-बाप के ऊपर बा, जे आपन ओह कामन के लेके लापरवाह भा अनजान रहेलें जे बच्चा के जनम के पहिलवें ओकरा के अपंग बना देवेलें।

जाहिर बा कि तु एगो आउरी सबाल पूछ सकत बाड़, जदपी उ बेलकुल बचकाना बाटे। उ सवाल बा कि जो भगवान नइखन त लोग-बाग काहे ओनकरा में बिस्वास करे लगलें? हमार जबाब सोझ आ बेबाक़ बा – जे तरी लोग भूत-परेत आ दुस्ट आतमा में बिस्वास करे लागलें, ओही तरे भगवानो के मानें लगलें। फ़रक खाली एतने बा कि भगवान में बिस्वास दुनिया भर में फैलल बा आ ओकर दरसन बहुते बढ़ल-चढ़ल बा। किछु उग्र बदलावबादी (रैडिकल) लोगन के उलट हम एकर उत्पत्ति के श्रेय ओही शोसकन के दिमाग़ के ना देवेलीं जे परमातमा के मौजूदगी के उपदेस देके लोगन के आपन प्रभुत्व में राखे चाहत रहलें आ ओ सभसे आपन खास हैसियत के अधिकार आ अनुमोदन चाहत रहलें। जदपी एह मूल बिंदु पे हमरा केवनो बिरोध नइखे कि कुल्ही धरम, सम्प्रदाय, पंथ आ अइसन दोसर संस्था आख़िर में निरदयी आ शोसक संस्था, आदमी आ तबका के समर्थक हो जालीं स। अचरज के बात नइखे कि राजा के खेलाफ बिद्रोह कुल्ही धरम में हरमेसा पापे रहल बा।

भगवान के उत्पत्ति के लेके हमार बिचार ई बा कि आदमी आपन कमी, कमजोरी के समझला के बाद, इंतहान के बखत क बहादुरी से सामना करे, आपन जोस बढ़ावे ख़ातिर, कुल्ही ख़तरा के मरदाना लेखा झेले आ सम्पन्नता आ ऐश्वर्य के घरी आदमी के गरब से फूलिके फूटला से बान्हे ख़ातिर भगवान के मनगढ़ंत रचना कइलस। भगवान के उदारता, उनकर दया-माया आ भलमनसी के खूब बढ़ा-चढ़ा के गढ़ल आ बतावल गइल। जब भगवान के करोध आ ओनकर नियम-क़ानून के चर्चा होखेला त भगवान के इस्तेमाल डरावे ख़ातिर कइल जाला ताकि आदमी समाज ख़ातिर केवनो ख़तरा ना बने। जब ओनकरा के माई-बाप लेखा बतावल जाला तब भगवान के इस्तेमाल एगो बाप, मतारी, भाय, बहिन, संगी-साथी मतिन कइल जाला। ए तरे जब आदमी आपन संगी-दोस्तन के धोखा आ साथ छूटला से बहुते दुखी होखे तब ओकरा के एही बिचार से संतवना मिलेले कि एगो सच्चा संगी (भगवान) ओकर मदद ख़ातिर बा, उहे ओकरा के सहारा दिही, जे कि सभका से बलवान बा आ कछहु कर सकत बा। असल में आदिम ज़माना में ई बिचार समाज ख़ातिर उपयोगी रहे। बिपत में पड़ल आदमी ख़ातिर भगवान के ई कल्पना मददगार होखेले।

समाज के भगवान में बिस्वास के खेलाफ ओही तरे लड़े के होखी जइसे मूरत-पूजा आ धरम से जुड़ल दोसर दक़ियानूसी बातन के खेलाफ लड़े के पड़ल रहे। ए तरे जब आदमी आपन गोड़ पे खड़ा होखे के कोसिस करे लागे आ असलियत में भरोसा राखे लागे तब भगवान में सरधा के एक ओरी फेंकी देवे के चाहीं आ सगरी तकलीफ़, मुसकिल जेवन आदमी के आपन जिनगी में देखेके के पड़ेले

ओकर सामना पौरुख से करे के चाहीं। इहे हालत हमार आज बा। ई हमार घमंड नइखे। हमार संगी! ई हमार सोचला के तरीक़ा बा, जवन हमरा के नास्तिक बनवले बा। हम नइखी जानत कि भगवान में बिस्वास आ रोज-ब-रोज पूजा – जेकरा के हम आदमिन के सबसे स्वार्थी आ गिरल काम मानींला – हमरा ख़ातिर मददगार होखी भा हमार हालत के आउरी चौपट कर दिही। हम ओ नास्तिकन के बारे में पढ़ले बानीं, जे कुल्ही बिपत के सामना बहादुरी से कइलन। एही बदे हमहुं एगो मरद लेखा फाँसी के फंदा पे चढ़ला के आख़िरी घरी ले आपन माथा ऊँचा कइले खड़ा रहल चाहत बानीं।

देखे के बा कि हम एही बात पे केतना खरा उतर पावत बानीं। हमार एगो संगी हमरा से पूजा-प्रार्थना करे के कहलें। जब हम उहाँ के आपन नास्तिक होखला के बात बतइनीं त उ कहलें 'देख लिहा, आपन आख़िरी दिन में तुहुँ भगवान के माने लगबा।' हम उहाँ से कहलीं 'ना, दोस्त, अइसन ना होखी। अइसन कइल हमरा ख़ातिर हार आ बेइज़्ज़ती के बात होखी। आपन स्वारथ ख़ातिर हम कबहूँ प्रार्थना ना करब।' पाठक, हमार दोस्त लोग, का ई अहंकार बा? जो बा, त हम एकरा के सकारत बानीं।

अनुवादक परिचय

शुभनीत कौशिक

बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी से इतिहास में स्नातकोत्तर.

सेंटर फॉर हिस्टॉरिकल स्टडीज़, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से एम. फ़िल. और पी-एच.डी.

आधुनिक भारत के इतिहास, महात्मा गांधी के जीवन-दर्शन और हिंदी साहित्य के इतिहास में गहरी रुचि. हिंदी की पत्रिकाओं *प्रतिमान, तद्भव, समयांतर, वागर्थ, मधुमती* आदि में इतिहास और समकालीन मुद्दों पर नियमित लेखन. *इतिहास, भाषा और राष्ट्र* (संवाद प्रकाशन, 2022) पुस्तक प्रकाशित.

संप्रति : असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, सतीश चंद्र कॉलेज (बलिया).

ईमेल : kaushikshubhneet@gmail.com